ISSN 0973-217X

COMMUNICATION TODAY

A BILINGUAL MEDIA QUARTERLY

VOL. 22, NO. 2 (April-June, 2018)

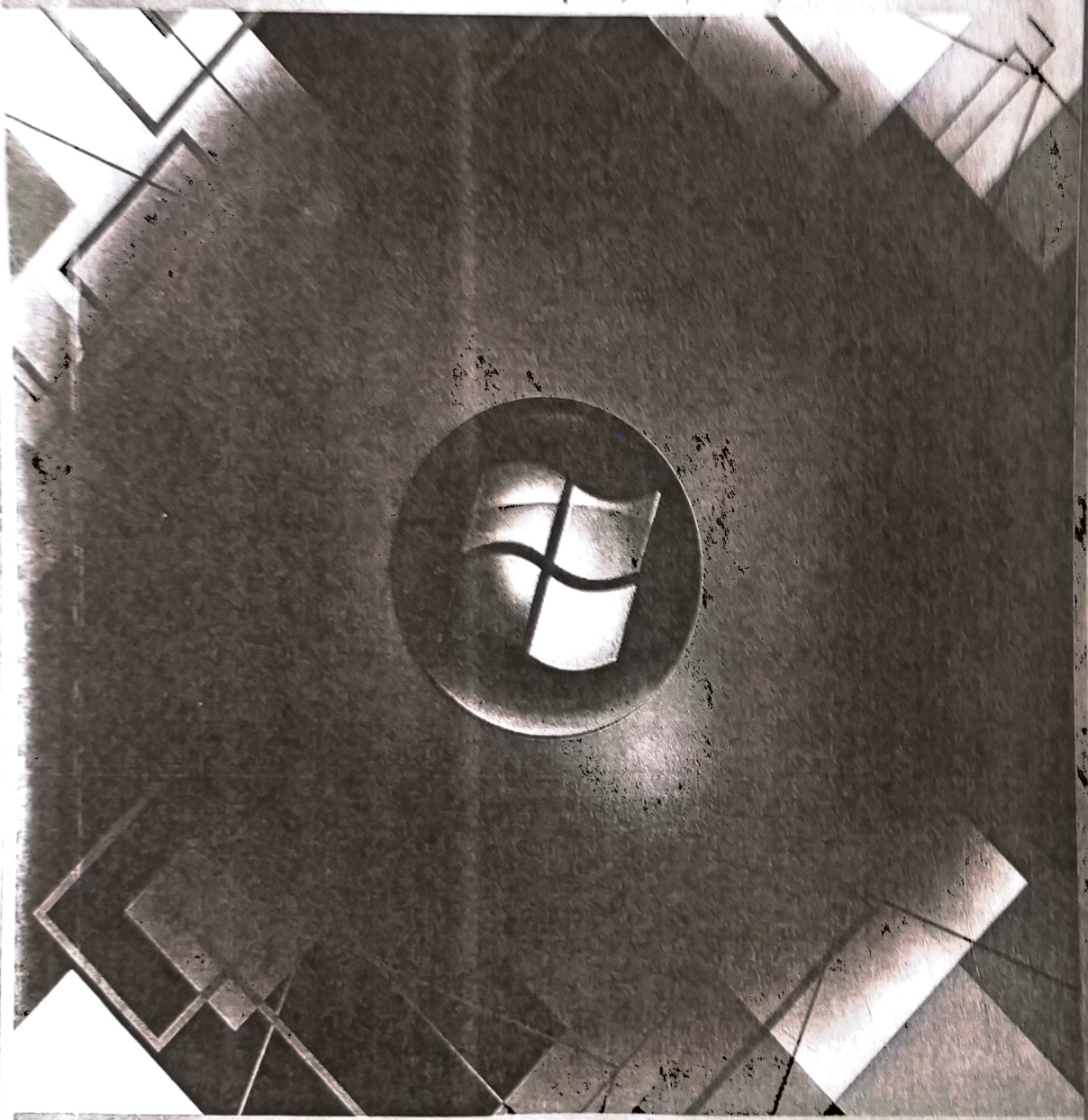

LIGHTHOUSE OF MEDIA PROFESSIONALS

RNI No. 58028/94

ISSN 0975-217X

Yearly Subscription :

Rs. 500/- (Individual)

Rs. 1000/- (Institutional)

Life Membership :

Rs. 5000/- (Individual)

Rs. 10000/- (Institutional)

For subscription send DD in favour of
'Communication Today' Payable at Jaipur
or
can be deposited online
HDFC Bank
Branch : Raja Park, Jaipur - 302004 (Rajasthan)
Branch Code : 1377
Acc. No. 13777630000120
IFSC Code : HDFC0001377
MIRC Code : 302240009
Nature of Account : Current

Edited, printed and published by :

Prof. (Dr.) Sanjeev Bhanawat
C-235A, Dayanand Marg, Tilak Nagar,
JAIPUR - 302 004 (INDIA)
Tel. : 0141-2620944, 2622862, M : 094140-73466
e-mail : bhanawat.sanjeev@gmail.com
communicationtoday1996@gmail.com

Printed at : Popular Printers, Jaipur

Contents

1. ***Impact of Cartoon Programmes on Children in Madurai***
   S. Shanmuga Mohana
   Dr. V. Monica Hepzhibah Pushpabai 1

2. ***Press Photography and Visual Framing of Violence in Assam***
   Syed Murtaza Alfarid Hussain 10

3. ***Framing of Sustainable Health in Indian Newspapers***
   Shilpa N. Naik
   Dr. Ujjwala Barve 21

4. ***Potential of Social Media in Northeast India: An Analysis***
   Dr. Silajit Guha 29

5. ***Improving Health System in Rajasthan with New Media (ICT)***
   Dr. Vishal Singh 37

6. ***Impact of Social Networking Sites on Indian Youth and Nation Building***
   Dr. Sanjay Singh Baghel
   Dr. Uma S. Singh 49

7. ***Social Media for Cyber Democracy and Digitally Active India***
   Shreelata Prasad
   Prof. Manukonda. R 63

8. ***Stereotyped Portrayal of Women in Punjabi Rap Songs***
   Dr. Poonam Bisht 73

9. ***Demonetisation Impact: Media, Entertainment, Animation and Visual Effects Industry***
Dharmendra Kumar
Dr. Aman Vats 81

10. ***Next Generation Networks: Technology and its Resource Management***
Varun Jain 88

11. ***Political Campaign in Internet Era: Bihar Election 2015***
Kashif Hasan
Dr. Sanjay M Johri 99

12. ***Samyukta Karnataka***
Dr. Mrinal Chatterjee 112

13. ***Media Convergence: A Paradigm Shift***
ZakiaTasminRahman 116

14. ***इन्टरनेट पर बढ़ती भारत की क्षेत्रीय भाषाएँ***
डॉ. मुकुल श्रीवास्तव
सैय्यद काज़िम असग़र रिज़वी 132

15. ***ग्रामीण विकास और पारंपरिक लोक संचार माध्यम***
सुनीता 140

16. ***चित्रकला और जनसंचार (मधुबनी चित्रकला के विशेष संदर्भ में)***
श्वेता रानी 148

17. ***मुस्लिम विद्यार्थियों में मीडिया साक्षरता की स्थिति का अध्ययन***
सद्दाम हुसैन
चेतन भट्ट 153

18. ***Book Review***
M.R. Dua 161

ISSN 0975-217X

इन्टरनेट पर बढ़ती भारत की क्षेत्रीय भाषाएँ

डॉ. मुकुल श्रीवास्तव *
सैय्यद काज़िम असग़र रिज़वी **

सारांश

आमतौर पर यह समझा जाता है की अगर इन्टरनेट पर जानकारियों तक पहुँचना है तो इंग्लिश भाषा से परिचित होना जरूरी है क्योंकि इन्टरनेट का नाम आते ही एक ही भाषा उभर कर सामने आती है वो इंग्लिश है। इसका कारण यह है कि शुरुआत से लेकर अभी तक वैश्विक स्तर पर इंग्लिश भाषा इन्टरनेट के लिए लिंगुआ फ्रांका (Lingua Franka) के रूप में स्थापित थी, लेकिन अब भारत में इन्टरनेट पर भाषाओं का समीकरण तेज़ी से बदल रहा है, यहाँ भारत में यह देखा जा रहा है कि इन्टरनेट पर स्थानीय भाषाओं के उपभोक्ता अपनी संख्या तेज़ी से बढ़ा रहें हैं। 'एक अनुमान के अनुसार 2021 तक भारत में 53,60,00000 करोड़ भारतीय विभिन्न स्थानीय भाषाओं के द्वारा इन्टरनेट का उपयोग करेंगे।"

इस शोध पत्र के द्वारा यह बताने का एक प्रयास किया गया है कि आज भारत में इन्टरनेट पर क्षेत्रीय भाषाओं का उपयोग आम होने लगा है तथा भविष्य में इन्टरनेट पर भारत की क्षेत्रीय भाषाएँ अपनी एक अलग जगह बनाने में सफल होगें।

महत्वपूर्ण शब्द-*इन्टरनेट, वॉइस सर्च, यूनिकोड फॉण्ट, लैंग्वेज, डॉट कॉम, वेब।*

सन्दर्भ साहित्य पुनरावलोकन

न्यूज़ पोर्टल क्वार्टज़ (Quartz Media) पर 2 मई, 2017 को अनन्या भट्टाचार्य द्वारा लिखे गए लेख में यह बात स्पष्ट हो रही है के इन्टरनेट का आगे का विकास अब क्षेत्रीय भाषाओं के साथ मिलकर होगा। क्योंकि अगर मध्यम को वर्ग इन्टरनेट से जोड़ना है तो इन्टरनेट के पर उपलभ सामग्री को क्षेत्रीय भाषाओं को परोसना पड़ेगा। इसका मुख्य कारण यह है कि मध्यम वर्ग का विश्वास जितना क्षेत्रीय भाषाओं पर है होगा उतना इंग्लिश पर नहीं हो सकता।

डॉ. मुकुल श्रीवास्तव के अमर उजाला में 27 नवम्बर, 2014 को प्रकाशित लेख 'इन्टरनेट चला हिंदी की ओर' से स्पष्ट होता है कि इन्टरनेट के विकास की गति धीमी होती दिख रही है। तथ्य यह है कि भारत में इंटरनेट बाजार का विस्तार इसलिए ठहर-सा गया है, क्योंकि सामग्री अंग्रेजी में हैं, जबकि दुनिया की पांच प्रतिशत से कम आबादी अंग्रेजी का इस्तेमाल अपनी प्रथम भाषा के रूप में करती है, और दुनिया के मात्र 21 प्रतिशत लोग ही अंग्रेजी की समझ रखते हैं। इसके विपरीत अरबी या हिंदी जैसी भाषाओं में, जो दुनिया में

* एसोसिएट प्रोफेसर एवं अध्यक्ष ** शोधार्थी, पत्रकारिता एवं जनसंचार विश्वविद्यालय, लखनऊ विश्वविद्यालय, लखनऊ